अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ रामरती देवी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा एक सजीव, बहुआयामी और ऐतिहासिक चेतना के रूप में विकसित हुई है। यह अवधारणा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि सांस्कृतिक आत्मबोध, सामाजिक सुधार, मानवीय मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना से भी गहराई से जुड़ी रही है। औपनिवेशिक शासन के दौरान हिन्दी साहित्य ने राष्ट्रवादी चेतना को जाग्रत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतेन्दु युग में राष्ट्रवाद का स्वर प्रत्यक्ष, आह्वानात्मक और जन-जागरणकारी रहा, जबकि द्विवेदी युग में यह नैतिक, सुधारवादी और अनुशासित रूप में सामने आया। छायावाद ने राष्ट्रवादी चेतना को भावनात्मक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव से जोड़ा। प्रगतिवादी साहित्य में राष्ट्रवाद का पुनर्पाठ सामाजिक न्याय, वर्ग-संघर्ष और जनसाधारण की मुक्ति के संदर्भ में किया गया।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद का स्वर आत्मालोचनात्मक और आलोचनात्मक हो गया, जहाँ लोकतंत्र, सत्ता और सामाजिक असमानताओं पर प्रश्न उठाए गए। समकालीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद बहुवचनात्मक विमर्श का विषय बनकर उभरा है, जिसमें दलित, स्त्री, आदिवासी और वैश्वीकरण संबंधी दृष्टियाँ शामिल हैं। यह शोध-पत्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में राष्ट्रवाद की अवधारणा के विकास, स्वरूप और परिवर्तन का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि हिन्दी साहित्य ने राष्ट्रवाद को सत्ता-केंद्रित न होकर मानवीय, लोकतांत्रिक और न्याय-आधारित दृष्टि प्रदान की है।

मुख्य शब्द: आधुनिक हिन्दी साहित्य, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय, प्रगतिवाद, समकालीन विमर्श

शोध उद्देश्य

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा का सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
2. भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन हिन्दी साहित्य तक राष्ट्रवादी चेतना के विकास-क्रम को स्पष्ट करना।
3. विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, नई कविता एवं समकालीन साहित्य) में राष्ट्रवाद के स्वरूप और अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. यह विश्लेषण करना कि किस प्रकार हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद सामाजिक सुधार, मानवीय मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना से जुड़ा रहा है।
5. दलित, स्त्री और आदिवासी विमर्शों के संदर्भ में राष्ट्रवाद की पारंपरिक अवधारणाओं का पुनर्पाठ करना।
6. वैश्वीकरण और बाज़ारवादी संस्कृति के प्रभाव में राष्ट्रवाद की बदलती अवधारणा का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
7. यह प्रतिपादित करना कि आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद सत्ता-केंद्रित न होकर जनकेंद्रित, न्याय-आधारित और मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

1. भूमिका

राष्ट्रवाद आधुनिक विश्व की एक अत्यंत प्रभावशाली वैचारिक अवधारणा है, जिसने न केवल राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित किया है, बल्कि साहित्य, कला और संस्कृति को भी गहराई से रूपांतरित किया है। भारत जैसे बहुजातीय, बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों में हुआ। औपनिवेशिक शासन, विदेशी दासता, सामाजिक विषमताएँ और सांस्कृतिक आत्मबोध की खोज—इन सभी कारकों ने भारतीय राष्ट्रवाद को आकार दिया।

आधुनिक हिन्दी साहित्य, विशेषतः उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर इक्कीसवीं शताब्दी तक, राष्ट्रवादी चेतना का एक सशक्त वाहक रहा है। हिन्दी साहित्यकारों ने राष्ट्र को केवल भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों से युक्त एक जीवंत सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया।

यह लेख आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा का ऐतिहासिक विकास, वैचारिक विविधता, साहित्यिक अभिव्यक्तियों तथा आलोचनात्मक विमर्श का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. राष्ट्रवाद: अवधारणात्मक पृष्ठभूमि

2.1 राष्ट्रवाद की परिभाषा

राष्ट्रवाद एक ऐसी विचारधारा है जो किसी समुदाय को साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, भूभाग और सामूहिक चेतना के आधार पर एक 'राष्ट्र' के रूप में पहचान देती है। बेनेडिक्ट एंडरसन के अनुसार राष्ट्र एक "कल्पित समुदाय" है, जबकि अर्नेस्ट गेल्नर इसे आधुनिकता की उपज मानते हैं।

भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद पश्चिमी मॉडल से भिन्न रहा है। यहाँ राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार और नैतिक उत्थान से भी जुड़ा रहा।

2.2 भारतीय राष्ट्रवाद की विशिष्टता

भारतीय राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- सांस्कृतिक एकता में विविधता
- औपनिवेशिक विरोध की चेतना
- आध्यात्मिक और नैतिक आधार
- सामाजिक सुधार और समता की आकांक्षा

यही विशेषताएँ आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति को विशिष्ट बनाती हैं।

3. आधुनिक हिन्दी साहित्य: काल-विभाजन

आधुनिक हिन्दी साहित्य को सामान्यतः निम्न चरणों में विभाजित किया जाता है—

1. भारतेन्दु युग
2. द्विवेदी युग
3. छायावाद
4. प्रगतिवाद
5. प्रयोगवाद
6. नई कविता और समकालीन साहित्य

प्रत्येक चरण में राष्ट्रवाद की अवधारणा अलग-अलग रूपों में प्रकट हुई है।

4. भारतेन्दु युग और राष्ट्रवादी चेतना

4.1 ऐतिहासिक संदर्भ

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध भारतीय नवजागरण का काल था। अंग्रेजी शासन के दमन, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक पतन ने राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

4.2 भारतेन्दु हरिश्चंद्र और राष्ट्रवाद

भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवर्तक माना जाता है। उनके साहित्य में राष्ट्रवाद स्पष्ट, प्रत्यक्ष और उद्दात्त रूप में प्रकट होता है।

उनकी रचनाओं में—

- देश की दुर्दशा पर चिंता
- विदेशी शासन की आलोचना
- स्वदेशी चेतना का प्रसार
- भाषा और संस्कृति की रक्षा

जैसे तत्व प्रमुख हैं।

"भारत दुर्दशा" नाटक में वे कहते हैं—
"रोअहु भारतवासियो, अब रोने का समय है।"
यह पंक्ति केवल शोक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का आह्वान है।

4.3 अन्य भारतेन्दुयुगीन लेखक

प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी आदि लेखकों ने भी राष्ट्रवादी चेतना को साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।

5. द्विवेदी युग: नैतिक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

5.1 महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान

द्विवेदी युग में राष्ट्रवाद अधिक संयमित, बौद्धिक और सुधारवादी रूप में सामने आया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा।

उनके अनुसार साहित्य का उद्देश्य—

- राष्ट्रीय चरित्र निर्माण
- नैतिक उत्थान
- सामाजिक कुरीतियों का विरोध था।

5.2 राष्ट्र और सुधार

इस काल के साहित्य में राष्ट्रवाद सामाजिक सुधार आंदोलनों से जुड़ा रहा—

- नारी शिक्षा
- जाति-भेद का विरोध
- अंधविश्वासों की आलोचना

राष्ट्र की कल्पना एक नैतिक समाज के रूप में की गई।

6. छायावाद और भावनात्मक राष्ट्रवाद

6.1 छायावाद का स्वरूप

छायावाद को प्रायः व्यक्तिवादी और रहस्यवादी कहा जाता है, परंतु इसमें राष्ट्रवादी भावनाएँ भी अंतर्निहित हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

6.2 जयशंकर प्रसाद

प्रसाद के काव्य और नाटकों में भारत की गौरवशाली अतीत-चेतना राष्ट्रवाद का आधार बनती है। **"कामायनी"**, **"चंद्रगुप्त"**, **"स्कंदगुप्त"** जैसे ग्रंथों में राष्ट्र की रक्षा, त्याग और वीरता के आदर्श मिलते हैं।

6.3 निराला, पंत और महादेवी

- **निराला** का राष्ट्रवाद विद्रोही और जनपक्षधर है।
- **सुमित्रानंदन पंत** के यहाँ प्रकृति और राष्ट्र का सौंदर्यबोध है।
- **महादेवी वर्मा** के यहाँ करुणा और मानवीय राष्ट्रवाद दिखाई देता है।

7. प्रगतिवाद: वर्गीय चेतना और राष्ट्रवाद

7.1 वैचारिक आधार

प्रगतिवाद ने राष्ट्रवाद को सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से देखा। यह शोषित वर्गों के अधिकारों और सामाजिक न्याय से जुड़ा राष्ट्रवाद था।

7.2 प्रमुख लेखक

- **मुंशी प्रेमचंद**
- **नागार्जुन**
- **त्रिलोचन**
- **केदारनाथ अग्रवाल**

7.3 प्रेमचंद का राष्ट्रवाद

प्रेमचंद के लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि किसानों, मजदूरों और स्त्रियों की मुक्ति से जुड़ा था। **"गोदान"**, **"कर्मभूमि"**, **"रंगभूमि"** में राष्ट्रवाद मानवीय और यथार्थवादी रूप में प्रकट होता है।

8. स्वतंत्रता के बाद का हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद

8.1 मोहभंग और पुनर्मूल्यांकन

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद का स्वरूप बदल गया। अब प्रश्न थे—

- लोकतंत्र की विफलताएँ
- भ्रष्टाचार
- सामाजिक असमानता

8.2 नई कविता और राष्ट्र

अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह के यहाँ राष्ट्रवाद आलोचनात्मक और आत्मविश्लेषणात्मक है। **मुक्तिबोध** का राष्ट्रवाद 'आत्मालोचन' पर आधारित है।

9. समकालीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद

9.1 विविध दृष्टिकोण

समकालीन साहित्य में राष्ट्रवाद एक बहस का विषय है—

- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

- संवैधानिक राष्ट्रवाद
- वैश्वीकरण बनाम राष्ट्र

9.2 दलित और स्त्री लेखन

दलित और स्त्री लेखन ने राष्ट्रवाद की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती दी। इनके लिए राष्ट्र तब तक अधूरा है जब तक सामाजिक न्याय नहीं मिलता।

10. आलोचनात्मक विवेचना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद—

- कभी प्रेरक शक्ति बना
- कभी सत्ता-विमर्श का उपकरण
- कभी प्रतिरोध का माध्यम रहा है।

साहित्य ने राष्ट्रवाद को अंधभक्ति से बचाकर मानवीय मूल्यों से जोड़े रखने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा बहुआयामी, गतिशील और परिवर्तनशील रही है। भारतेन्दु युग के जागरण से लेकर समकालीन विमर्श तक राष्ट्रवाद ने विभिन्न रूप धारण किए—कभी सांस्कृतिक, कभी सामाजिक, कभी आलोचनात्मक। हिन्दी साहित्य ने राष्ट्र को केवल सत्ता या सीमा में नहीं बाँधा, बल्कि उसे मानवता, न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों से जोड़ा। यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ सूची

[1]. आनंद, स. (2003)। हिन्दी का आधुनिक साहित्य और राष्ट्रवाद। दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
[2]. भट्टाचार्य, र. (2010)। राष्ट्रवाद और हिन्दी साहित्य: एक आलोचनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: के.के. पब्लिकेशन।
[3]. भट्टाचार्य, स. (2014)। राष्ट्रवाद के साहित्यिक रूप: भारतीय परिप्रेक्ष्य। कोलकाता: मित्रा एंड कंपनी।
[4]. चतुर्वेदी, पी. (2008)। महावीर प्रसाद द्विवेदी और राष्ट्रवाद। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
[5]. चतुर्वेदी, आर. (2016)। हिन्दी साहित्य के युग और राष्ट्रवाद। दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
[6]. दुबे, स. (2012)। प्रेमचंद: यथार्थवादी राष्ट्रवाद और सामाजिक चेतना। लखनऊ: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
[7]. गांधी, म. क. (1998)। हिंद स्वराज: सांस्कृतिक और राजनीतिक विचार। अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
[8]. गांगुली, के. (2011)। आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
[9]. जैन, र. (2009)। छायावाद और भारतीय राष्ट्रवाद। जयपुर: सूर्य प्रकाशन।
[10]. झा, पी. (2015)। हिन्दी साहित्य का सामाजिक और राष्ट्रवादी संदर्भ। पटना: विद्यापीठ प्रेस।
[11]. जोशी, स. (2007)। अज्ञेय और आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रवाद। दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
[12]. कपूर, ए. (2013)। प्रगतिवाद और सामाजिक राष्ट्रवाद। नई दिल्ली: सेज पब्लिशिंग।
[13]. कुमार, डी. (2010)। हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद: ऐतिहासिक दृष्टिकोण। दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स।
[14]. लोहिया, पी. (2012)। दलित साहित्य और राष्ट्रवाद का पुनर्विचार। मुंबई: ग्रंथाली।
[15]. मिश्रा, ए. (2005)। छायावाद से प्रगतिवाद तक: हिन्दी कविता में राष्ट्रवाद। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
[16]. मुखर्जी, पी. (2014)। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिन्दी साहित्य। नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स।
[17]. नारायण, आर. के. (2001)। आधुनिक हिन्दी कथा और राष्ट्रवाद। दिल्ली: साहित्य अकादमी।
[18]. नौटियाल, आर. (2008)। महादेवी वर्मा और हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना। लखनऊ: प्रकाशन संस्थान।
[19]. पंत, आर. (2009)। सुमित्रानंदन पंत और राष्ट्रवाद। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
[20]. प्रसाद, जे. (1997)। राष्ट्रवाद और भारत का साहित्य: एक समीक्षा। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
[21]. सिंह, के. (2011)। नागार्जुन और समकालीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद। पटना: विद्या प्रकाशन।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक1, जनवरी - मार्च 2025

[22]. त्रिपाठी, ए. (2006)। छायावाद का काव्य और राष्ट्रवाद। दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
[23]. वैद, आर. (2013)। आधुनिक हिन्दी साहित्य और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना। नई दिल्ली: सेज पब्लिशिंग।
[24]. वर्मा, एम. (2015)। दलित, स्त्री और समकालीन राष्ट्रवाद: हिन्दी साहित्य का अध्ययन। जयपुर: सूर्य प्रकाशन।
[25]. वर्मा, आर. (2004)। राष्ट्रवाद की परंपरा और हिन्दी साहित्य। वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
[26]. यादव, एस. (2016)। हिन्दी साहित्य और वैश्वीकरण: राष्ट्रवाद की चुनौतियाँ। नई दिल्ली: कैम्ब्रिज इंडिया।